विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (VI)

बजरंग महराज के बाएँ हाथ में ग्राहक ने एक रुपए और पचास पैसे का सिक्का रखा। बजरंग महराज ने दाहिने हाथ से उस सिक्के को उठाकर गल्ले की पेटी में बने खाँचे में डाल दिया। गल्ले की पेटी में सिक्का गिरने की आवाज़ आती। सिक्के पर सिक्का गिरने की आवाज़ और बौने पहाड़ की गहराई तल पर सिक्कों की ढेरी पर पत्थर के गिरने की आवाज़ बहुत मिलती-जुलती थी। सिक्के पर सिक्के गिरने की आवाज़ सिक्के की होती और पत्थर के सिक्के पर गिरने की आवाज़ भी सिक्के की होती। गल्ले की पेटी, तखत से सटे फर्श पर रखी होती। गल्ले की पेटी तखत की ऊँचाई के बराबर थी। परन्तु ग्राहक उत्सुकता वश रुककर गल्ले में सिक्का गिरने की आवाज़ सुनता तो उसे लगता कि बहुत गहराई से आवाज़ आती है। अगर ग्राहक इस तरह खड़ा रह जाता तो बजरंग महराज धीरे से बोलते कि वही आदमी सुने, "क्यों खड़ा है?" तब भी ज़ोर से शेर के दहाड़ने की आवाज़ आती। और वह आदमी घबरा जाता। वहाँ से तेज़ी से दूर चले जाना चाहता। यदि बजरंग महराज कुछ भी न बोले और शेर दहाड़े तो भी लोग कहते कि बजरंग महराज बोल रहे हैं। धीरे-धीरे शेर का दहाड़ना बजरंग महराज का बोलना हो गया। दो-एक दिन शेर की आवाज़ सुनाई नहीं देती तो लोग कहते बजरंग महराज की आवाज़ सुनाई नहीं दी। लोग यह भी अनुमान लगाते कि बजरंग महराज जो सिक्का गल्ले की पेटी में डालते हैं असल में पहाड़ की गहराई के मुख में डालते हैं। और गल्ले की पेटी का सिक्का गहराई के तल पर सिक्कों के ढेर पर ही गिरता है।

कभी ग्राहक से होता कि सिक्का देते-देते वह बरामदे के फर्श पर गिर जाता। उस सिक्के को ढूँढते तो सिक्का नहीं मिलता। दुबारा देने लगते तो बजरंग महराज कहते "रहने दो। मिल गया है।" ग्राहक पलटकर इतनी तेज़ी से जाता कि होटल से कुछ दूर निकल जाता तब शेर के दहाड़ने की आवाज़ सुनाई देती। आवाज़ से छुपकर भागने की कोशिश करते तो भी आवाज़ ढूँढ लेती और सुनाई देती। यह सच होगा कि बजरंग महराज को देने के लिए जो सिक्का गिर जाता है वह गिरता नहीं वह उनको मिल जाता है। खन्न से फर्श पर गिरा तो लगता सीधे गल्ले की पेटी में खन्न से गिरा। कुछ लोग तो बजरंग महराज को पैसा देने से बचते थे। अपने साथी से या चाय देने वाले से कहते, "पैसा तुम दे दो।" चाय देने वाला मना कर देता। या मुँह पर उँगली रखकर कहता, "पैसा नीचे गिरा दो।" ग्राहक फर्श पर खन्न से पैसा गिरा देता। जब पैसा खन्न से नहीं गिरता या कम आवाज़ होती तो ग्राहक सोचता कि पता नहीं सिक्का बजरंग महराज को मिला कि नहीं। तब सिक्का उठाकर दुबारा ज़ोर से गिराने की उसकी इच्छा होती। परन्तु पहली बार के गिरने में ही बजरंग महराज को सिक्का मिल जाता। सिक्का गिरने के बाद ढूँढने से कभी नहीं मिलता था।

बिना भुगतान किए कोई रहता नहीं था। कभी होटल से निकल आते और भुगतान करना भूल जाते। रास्ते में याद आता तो लौटकर जाते और बरामदे के फर्श पर कहीं सिक्का खन्न से डाल देते। बजरंग महराज की हथेली पर सिक्का रखने से बचते। और खुशी से घर लौट आते। यदि पैसा देना देर तक याद नहीं आता, रात को पैसे देने की याद आती या सपने में याद आती, आधी रात को नींद खुलती तो उठकर खूँटी में टँगी कमीज़ उतारकर जेब से पैसे निकालते। और वहीं पैसा गिरा देते। खन्न की आवाज़ आती। तब निश्चित होकर सो जाते। दूसरे को रात के सन्नाटे में खन्न की आवाज़ आती तो वह समझ जाता कि चाय-भजिया के पैसे देना भूल गया था। हिसाब चुकता कर रहा है। फर्श पर ऐसा सिक्का गिर जाता जिसका बजरंग महराज से लेना-देना नहीं है, वह पड़ा हुआ भी आसानी से दिख जाता और उसे उठा लिया जाता। यदि नहीं मिलता तो इसका यह मतलब नहीं कि वह बजरंग महराज को मिल गया है। दूसरे अन्य को मिलता तो वह घास की छप्पर वाली झोपड़ी में जाता और बूढ़े-बूढ़ी के पास जमा कर देता। और सिक्का कहाँ मिला यह बता देता जैसे आम के पेड़ों की सड़क पर सबसे खट्टे आम के पेड़ के नीचे मिला। बस्ती में केवल सिक्के चलते थे। तरह-तरह के सिक्के चलते। इधर-उधर से भटक कर आए लोग जिस तरह का और जितना सिक्का लाते वह पहले के सिक्कों के साथ मिलकर चलन में आ जाता। बहुत पहले के सोने और चाँदी के सिक्के जो दो-चार ही होंगे, उन्हें कोई नहीं लेता था। उसके चिल्हर किसी के पास नहीं थे। इसके बाद भी उसको चलाया जाता तो वह खराब, गिल्लट के सिक्के जैसा चलता।

नुकीले पंख वाला बाज था। उसका निचला भाग सफेद और ऊपरी भाग नीला भूरा बौने पहाड़ की एक ऊँची चट्टान पर बैठा शिकार की ताक में था। दो खंजन चिड़ियाँ जो बोलू के साथ कुछ देर पहले छुपा-छुपाइल खेल कर लौट रही थीं बाज को दिखीं। जैसे जंगल में शेर दूसरे जानवरों को दिखता है और जानवर जान बचाकर भागते हैं उसी तरह बाज जिस पेड़ पर बैठता है उस पेड़ की सभी चिड़ियाँ जान बचाने उड़ जाती हैं। यह लड़ाकू पक्षी चिड़ियों को मार कर खाता है। बाज की आँख बहुत तेज़ होती है। वह खंजन को ताक रहा था कि उसे झपट्टा मारकर दबोचना है। बाज तीर की तरह निशाने की तरफ उड़ा। पर जिस खंजन को उसने निशाना बनाया था उससे वह चूक गया। वहाँ खंजन चिड़िया दिखी नहीं। या तो खंजन चिड़िया सावधान थी। अथवा यह भी हो सकता है कि साथ की दूसरी खंजन ने उसे गायब कर दिया हो। खंजन में स्वयं गायब होने का गुण न ही होता होगा। उसके सिर में तो पंख नहीं होते। बाज ने गोता लगाया। उसे दूसरी खंजन दिखी। इस खंजन की ओर वह निशाने के तीर जैसा उड़ा। इस बार उसका निशाना फिर चूक गया। हो सकता है पहले वाली खंजन ने दूसरी खंजन को गायब कर उसकी जान बचाई हो। दो खंजन के साथ ने बाज को थका दिया। बाज को यह थकावट उड़ने से नहीं निराशा से हुई थी।

जंगल का एक छोटा-सा हिस्सा बबूल का जंगल था। यह हिस्सा बस्ती और जंगल के बीच था। बबूल का जंगल जानबूझकर बना था कि बस्ती के लोग जंगल के अन्दर न जाएँ। थककर बाज बबूल के एक पेड़ पर बैठ गया था। बोलू जब बबूल के पेड़ों के बीच से निकला था तब झोंकों के पंखों का नुकीले काँटों से कुछ नहीं बिगड़ा था। रबर के हवा भरे पंख होते तो पंख में छेद हो जाते। हवा निकलने से बोलू गिर पड़ता। हवा तो बबूल के काँटों भरे जंगल में भी साँय-साँय चलती है। और हवा पंक्चर नहीं होती।

हवा अदृश्य थी। बोलू के झोंकों के पंख अदृश्य थे। जो दूर चला जाता है अदृश्य हो जाता है। खंजन चिड़िया पर बाज़

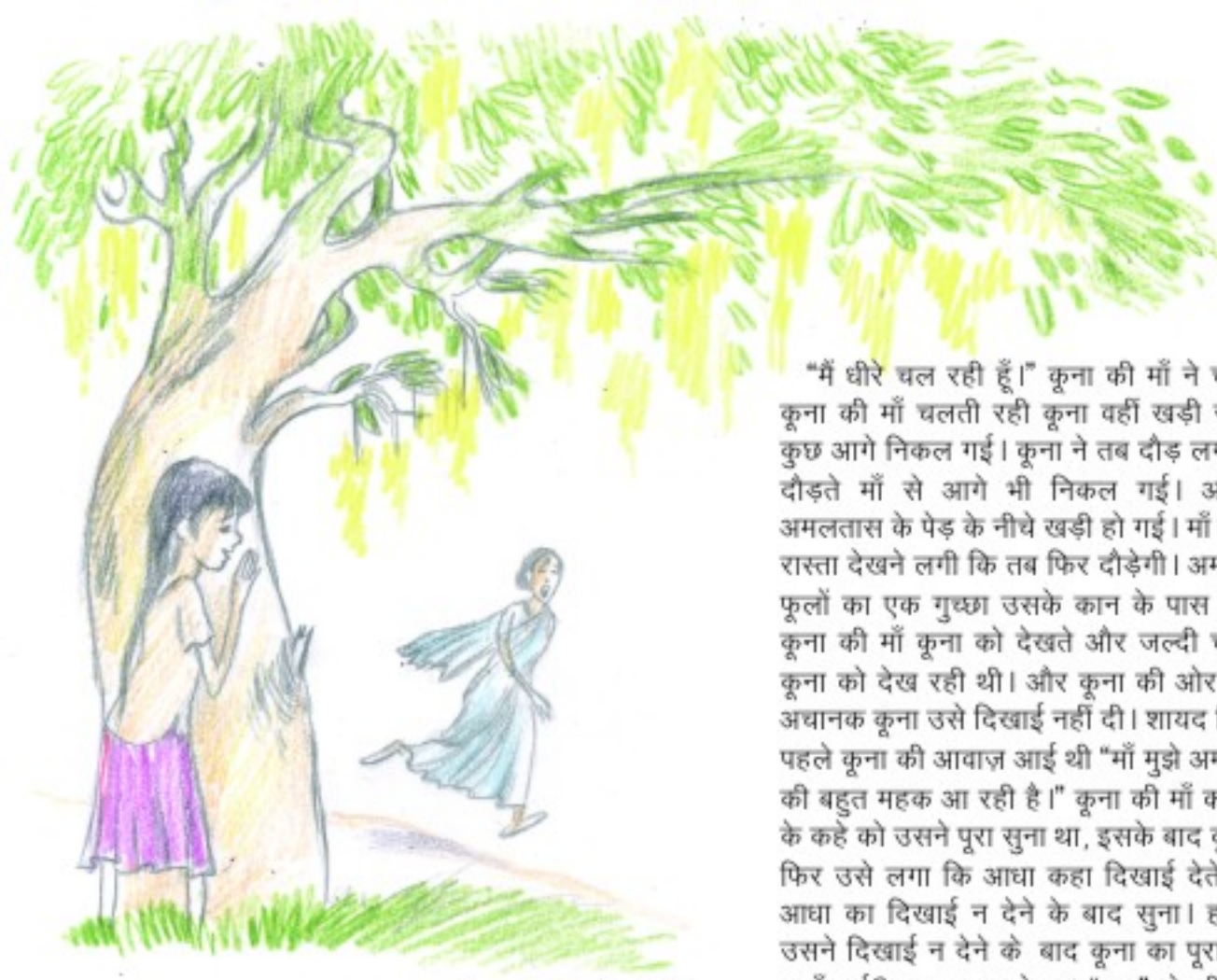

आक्रमण कर रहा था। यह बोलू को दिखाई नहीं दिया था। बोलू देख लेता तो झोंकों के पंख के सहारे उड़ता और बाज़ को भगा देता। जिन्होंने इसे नहीं देखा था यह उनके लिए अदृश्य था।

खंजन चिड़िया जब उड़ती है तो उसकी उड़ान के पथ के नीचे अनेक लोग आते। जिनके सिर के ऊपर वह क्षण भर रहती होगी। और निकल जाती होगी। तब क्षण भर गायब होकर ये दिख जाते होंगे। उनका गायब होना और दिख जाना इतनी जल्दी होता कि पता भी नहीं चलता होगा कि गायब हुए। अधिक समय के लिए अदृश्य होना तभी सम्भव होता होगा जब अधिक समय के लिए खंजन सिर के ऊपर रहे। पंख सिर पर रखना सबसे अच्छा है जितनी देर रखेंगे गायब रहेंगे। आसपास की सभी खंजन चिड़ियाँ बोलू को और बोलू के सभी मित्रों को पहचानने लगी थीं। खंजन चिड़िया का मन बोलू और बोलू के मित्रों से खेलने का होता।

एक दिन कूना पैदल अपनी माँ के साथ जा रही थी। कूना जल्दी चल रही थी। कूना के कदम छोटे-छोटे थे। साथ चलने के लिए कूना की माँ धीरे चल रही थी। कूना की माँ के कदम बड़े थे। कूना चलने से थक गई थी। कूना की माँ धीरे चलने से। "कूना जल्दी चलो।" माँ ने कहा। "माँ मैं जल्दी-जल्दी चल रही हूँ।" कूना ने कहा। कुछ देर बाद "माँ मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकती।" रुकते हुए कूना ने कहा।

"मैं धीरे चल रही हूँ।" कूना की माँ ने चलते हुए कहा। कूना की माँ चलती रही कूना वहीं खड़ी रही। उसकी माँ कुछ आगे निकल गई। कूना ने तब दौड़ लगाई और दौड़ते-दौड़ते माँ से आगे भी निकल गई। आगे जाकर वह अमलतास के पेड़ के नीचे खड़ी हो गई। माँ के पास आने का रास्ता देखने लगी कि तब फिर दौड़ेगी। अमलतास का पीले फूलों का एक गुच्छा उसके कान के पास लटक रहा था। कूना की माँ कूना को देखते और जल्दी चलने लगी। वह कूना को देख रही थी। और कूना की ओर जा रही थी कि अचानक कूना उसे दिखाई नहीं दी। शायद दिखाई न देने के पहले कूना की आवाज़ आई थी "माँ मुझे अमलतास के फूलों की बहुत महक आ रही है।" कूना की माँ को लगा कि कूना के कहे को उसने पूरा सुना था, इसके बाद कूना नहीं दिखी। फिर उसे लगा कि आधा कहा दिखाई देते तक सुना और आधा का दिखाई न देने के बाद सुना। हो सकता है कि उसने दिखाई न देने के बाद कूना का पूरा कहा सुना हो। कहाँ गई? इधर-उधर देखा। "धक" से जी हुआ। कूना के कान के पास अमलतास का फूल जिस डाल का था उसी डाल पर खंजन चिड़िया आकर बैठ गई थी। जिससे पीले फूल का गुच्छा और नीचे हो गया। नीचे होकर फूलों ने छोटी-सी कूना के गाल को छुआ। फूलों का गुच्छा कूना के न दिखने के बाद भी हिल रहा था। कूना की माँ व्याकुल थी। उसे लगा कि वह भागकर घने पेड़ों के बीच आगे चली गई है। कूना की माँ दौड़ने लगी। और वह हिलते अमलतास के गुच्छे के भी आगे पेड़ों तक निकल गई। तब भी कूना उसी फूल के गुच्छे के पास खड़ी थी। कूना को यह देख नहीं पाई। पर कूना ने सामने से माँ को भागते देखा तो खुश हो गई। कुछ कहा भी नहीं। कूना ने सोचा कि माँ को आगे जाने दो। दौड़कर वह माँ को पकड़ लेगी। जब माँ बहुत आगे निकल गई। तब कूना ने वहीं खड़े-खड़े चिल्लाया "माँ, मैं आ रही हूँ।" माँ ने पीछे मुड़कर देखा कि कूना की आवाज़ पीछे से आई है। पीछे मुड़ने के बाद कूना को दौड़ते आते देख वह खुश होकर हँसने लगी थी। फिर उसे लगा कि कूना की आवाज़ उसने पहले सुनी थी। मुड़ते ही पहले कूना दिखी नहीं थी। कुछ पल बाद दिखी। "माँ" सुनने के तुरन्त बाद वह मुड़ी थी। कूना ने पेड़ के नीचे रुके हुए ही कहा था, "माँ आ रही हूँ।" इसके बाद दौड़ना शुरु किया। दौड़ते ही वह खंजन के नीचे से हट गई होगी और दिखने लगी होगी।

जारी...